अहलेसुन्नत का पैगाम गुस्ताख दावत–ए–इस्लामी के नाम

बदनाम ज़माना तहरीक पाकिस्तानी तन्ज़ीम 'दावत–ए–इस्लामी' की एक किताब 'सरकार का पैगाम आत्तार के नाम' जो मज्लीस अल–मदिनतुल इल्मीया, पाकिस्तान कराची की पेशकश है । इन्के मक्तबतुलमदिना मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने भेंडी बज़ार मुंबई–3 सुबा महाराष्टर से हासील हुई.

इसे पढकर हैरत हुई के ये हाज़रात इल्यास आत्तार और आपनी तन्ज़ीम की पब्लीसीटी के लिये कितने ओछे और गंदे हातकंडे आपना रहे है । अकिदत का लबादा ओढकर गुस्ताखिया कर रहें है । अगले ज़माने के गुम्राह फिरकों के मुतअल्लीक किताबों में आया के "वो लोग आपनी किताबों में तहरिफ करते और अहकाम को आपनी मर्ज़ी के मुताबीक बनाते या इसके अहकाम गलत तरिकों से लोगों के सामने पेश करते थे और आपने नाजायज़ व हराम कामों को जायज़ बताते थें" आज इस जदीद दौर में जबके कंम्प्युटर, टीवी, मोबाईल फोन वगैरा के ज़रिये दुनिया सिमट गई है और मुख्तलीफ कंम्पनीया आपना कारोबार करती है और आपनी कंम्पनी और सामान की खुबी लोगों में बहतर तौर से पेश करने के लिये अख्बार, टीवी, इंटरनेट वगैरा पर इश्तेहार पेश करती है ताके लोग उनकी बनाई चीज़े खरिदें जिसमें मश्हुर लोगों की पसंदिदा शख्सीयतों का इस्तमाल किया जाता है ताके जो लोग उन्हें चाहतें हो वो इस सामान को लें ।

अब चुंके 'दावत–ए–इस्लामी' वालों नें टीवी, ड्रामों फिल्मों को जायज़ करदीया है और आईने की तरह टीवी और फिल्मों के चलते हुए भी इसके सामनें नमाज़ पढते है खुसुसन इल्यास आत्तार इसपर जल्वा फर्मा हो.. 'सरकार का पैगाम आत्तार के नाम' किताब में भी हुज़र सल्ललललाहो अलैह व सल्लम, गौस–ए–पाक रदिअल्लाहुअन व दीगर बुज़ूर्गो की शख्सीयतों का इस्तमाल किया गया है । आलमें बैदारी और ख्वाबों के ज़रिये इल्यास आत्तार और दावत–ए–इस्लामी की बढाई और दरपर्दा टीवी और फिल्मों के जवाज़ (जायज़) की सुरत निकाली गइ हैं ।

मस्लन :

इल्यास आत्तार के एक पाकिस्तानी मुरीद मदिना शरीफ हाज़िर हुए 5–शव्वाल 10–हिजरी को जब इसने दीगर लोगों के सलाम के साथ इल्यास आत्तार का सलाम भी पेश किया तो क्या हुआ सुनिये.. "जालाये मुबारक के पिछे से अवाज़ आई मेरे इल्यास को भी मेरा सलाम कहना!!" मैं एकदम से चौका इधरउधर देखा तो हरतरफ माहोल पुरसुकुन था ईद गुज़र जाने के बाइस वहा बहोत कम लोग थे मैंने एक बार फिर मेरे पिरोमुर्शिद अमिर अहलेसुन्नत का सलाम बारगाह–ए–रिसालत सल्ललललाहो अलैह व सल्लम में पेश किया तो दोबारा जाली–ए–मुबारक के पिछें से अवाज़ आई मेरे इल्यास को भी मेरा सलाम कहना!! ये सुनकर मुझपर रिक्कत तारी हुई और बे इख्तीयार मैंने एकबार फिर मेरे पिरोमुर्शिद अमिर अहलेसुन्नत का सलाम बारगाह–ए–रिसालत सल्ललललाहो अलैह व सल्लम में पेश किया, खुदा की कसम मैंने बैदारी (सोनें) की हालत में तीसरी बार सुना के मेरे इल्यास को भी मेरा सलाम कहना!!" (सरकार का पैगाम आत्तार के नाम सफह–6/7)

ज़ाहीर है के ये अवाज़ इल्यास आत्तार के मुरीद ही को सुनाई दी वर्ना और भी इसके गवाह होते, इतने यकिन से सुनने के बाद इस नालायक बेहुदे ने ये क्या किया!! के सरकार सल्लललाहो अलैह व सल्लम का पैगाम इल्यास आत्तार को न पहुंचाया!! कब पहुंचाया... महिनों बाद और क्यु ये सुनिये.. "30 सफर–उल–मुझफर 1430 हिजरी बरोज़ जुमेरात जब मैनें मदनी चैनल पर सुनहरी जालायों का रूहपरवर मंज़र देखा तो यकायक वही अवाज़ मुझे फिरसे सुनाई दी!! अल्फाज़ कुछ यु थे "मेरे इल्यास को अभी तक तुमने मेरा पैगाम नही पहुंचाया मैं बेकरार होगया"!!

(सरकार का पैगाम आत्तार के नाम सफह–6)

माअज़आल्लाह सुम्मामाअज़आल्लाह... इस वक्त वो खबिस बेकरार न हुवा जब वाकई रोज़–ए–अनवर पर तीन मर्तबा सलाम पहुंचाने का हुक्म सुना, होता भी कैसे लोगों को ये कैसे पता चल्ता के सरकार सल्लललाहो अलैह व सल्लम मदनी चैनल देखने वालों से गुफ्तगु फर्माते है । मदनी चैनल के हुजुर सल्लललाहो अलैह व सल्लम की बारगाह में मकबुल होने और टीवी के जवाज़ के लिये हुजुर सल्लललाहो अलैह व सल्लम की याख्सीयत का इस्तमाल इश्तेहार के तौर पर किया गया. देखा आपने कैसे इस्तमाल किया गया हुज़ुर सल्लललाहो अलैह व सल्लम को ये है दावत–ए–इस्लामी की खुली गुस्ताखी और नाफर्मानी.

सरकार सय्यदना गौस–ए–पाक रदिअल्लाहुअन और सय्यदना अहमद कबीर रफाई रदिअल्लाहुअन के मुताल्लीक मुस्तनद किताबों में है के इन बुजुर्गो की हाज़री जब सरकार सल्लललाहो अलैह व सल्लम की बारगाह में हुई तो हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम ने आपना दस्तेअक्दस जाली–ए–मुबारक से बाहर निकाला, उन बुजूरगों ने और दीगर खुश नसिबों ने दस्तेअक्दस को बोसा देने की साआदत हासिल की मगर इल्यास आत्तार के एक कराची (पाकिस्तान) के मुरीद की सुनिये.. जब वो रोज़ा–ए–अनवर पर हाज़ीर होकर दरूदो सलाम का नज़राना पेश कर रहा था । तो मैंने जागती हालत में देखा के सरकार सल्लललाहो अलैह व सल्लम तशरीफ लाये, आगये हैं सरकार सल्लललाहो अलैह व सल्लम के लबहाये मुबारक को जंबीश हुई रहमत के फुल झड़ने लगे, अल्फाज़ कुछ यु तरतिब पाये... "मेरे आत्तार इसबार मदिने क्यु नही आये, उन्हें मेरा सलाम कहना और कहना वो मदिने आये चाहे कुछ लम्हात के लिये ही आयें" मैंने बेसाख्ता बढ़कर दस्तबोसी की साआदत हासिल की"

(सरकार का पैगाम आत्तार के नाम सफह–10)

इस किताब मे लिखा है के ये वाकीया 1996 का है कितने ज़मानें बाद इसने सलाम पहुंचाया ये नही लिखा है और ये भी लिखा है के ये हज का मौका था और बाद नमाज़े असर ये वाकीया हुआ.. हाज़रात ये सभी जानतें है के इस मौके पर आशिकों की कैसी भिड़ होती है । और याहां साफ ज़ाहीर है के सरकार सल्लललाहो अलैह व सल्लम अपने जिस्में मुबारक के साथ तशरीफ लाये थे और हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम रहमतुल्लील आलमिन हैं हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम की रहमत आम है मगर सरकार सल्लललाहो अलैह व सल्लम इस वक्त इल्यास आत्तार के मुरीद के इलावा किसी को नज़र ना आये!! वरना आलम में धुम मच जाती, सारी दुनिया में इस वाकिये का चर्चा होता "मगर यहा ये बताया जाराहा है के देखो सारी दुनिया सरकार सल्लललाहो अलैह व सल्लम की याद में तळप रही है और और सरकार सल्लललाहो अलैह व सल्लम को बेचैनी से इल्यास आत्तार का इंतज़ार है कोन इल्यास आत्तार जो टीवी, विडीयो तस्वीरों को जायज़ कहनेवाले!! माज़अल्लाह.. ये है बेहुदगी और गुस्ताखी.

अब आगे सुनिये दावत–ए–इस्लामी की मरकज़ी इमारत फ़ैज़ाने मदिना कराची पाकिस्तान 2006 में 30 रोज़ा इज्तेमाई ऐतेकाफ में एक मुअत्तकीफ का बयान जो दो या तीन रोज़े को असर बाद मुनाजात करते हुये सोगया था ''इफतार से पहले मैंने देखा के शहेंशाह–ए–अबरार सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम आपने साहाबा–ए–किराम अलैहीम अजमइन के हमराह जल्वा फर्माह है इत्ने में चंद फिरीश्ते हाज़ीर होकर अर्ज़ करते है या रसुलआल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम आल्लाह तआला ने इल्यास कादरी को सलाम भेजा हैं'' ये सुनकर मेरी आंख खुल गई.

(सरकार का पैगाम आत्तार के नाम सफह–20)

इस शख्स का मजीद बयान हैं के 8 रमज़ान को फिर वो असर के बाद इफतार से पहले मुनाजात करते हुये सोगया, एकबार फिर वही नुरानी मंज़र आंखो के सामने आया यानी एकबार फिर हुज़र सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम आपने साहाबा–ए–किराम अलैहीम अजमइन के हमराह जल्वा फर्माह थे फिर क्या हुवा सुनिये ''चार फरीश्तों ने हाज़ीरे खिदमत होकर आप सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम को सलाम अर्ज़ किया आप सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम ने जवाब इर्शाद फर्माया फिर वो फरीश्ते अर्ज़ करने लगे या रसुलआल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम आल्लाहतआला ने इल्यास कादरी को सलाम भेजा है'' सरकार सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम के लबहाये मुबारक को जंबीश हुई रहमत के फुल झड़ने लगे, अल्फाज़ कुछ यु तरतिब पाये... ''उनको सलाम पहुंच जाएगा''

(सरकार का पैगाम आत्तार के नाम सफह–21)

देखा आपने एक ही शख्स ने हफ्ते में दो मर्तबा अपने कष्फ से मालुम करलीया के आल्लाह तआला की तरफ से खास हुजूर सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम को हुक्म होता है साहाबा की मौजुदगी में इल्यास आत्तार को आल्लाह तआला का सलाम पहुचाए और हुजूर सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम खुद हुक्म की तामिल की हामी भरतें हैं

ये है विडीयो–टीवी में आने वाले इल्यास आत्तार की फज़िलत और बड़ाई ज़ाहीर करने के लिए हुजूर सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम का इस्तेमाल. अब इल्यास आत्तार के एक और मुरीद की सुनिये जो 1429 हिजरी यानी 2008 ईद मिलादुन्नबी के मौके पर कल्गरी ग्राउंड, कराची पाकिस्तान में शिर्कत के लिए गया था वो कहता है ''सरकार सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम कह आमद मर्हबा के नारों की गुंज थी मैं इज्तीमा गाह में ये तमाम रूहपरवर मनाज़ीर बज़र्या स्क्रीन देख रहा था'' और आगे है ''आचानक मुझपर गुनुदगी तारी होगई और मेरे सामने एक नुरानी मंज़र भर आया देख्ताहुं मेरे सामने दो जहां के ताजदार सुल्तान बहरोबर नुर के पैकर सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम सैंद लिबास ज़ेबतन फर्माये सब्ज़आमामा शरीफ का ताज सजाए जल्वा फर्मा है चेहरा मुबारक चांद से ज़्यादा रोशन है और आप सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम बहुत खुश नज़र आ रहे थे हुजूर सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम के लबहाये मुबारक को जंबीश हुई रहमत के फुल झड़ने लगे, अल्फाज़ कुछ यु तरतिब पाये... ''मेरे गुलाम इल्यास को मेरा पैगाम पहुचादो आल्लाह तआला ने इज्तीमा में शरीक तमाम लोगों की बखशिश व मगफिरत फर्मादी.

(सरकार का पैगाम आत्तार के नाम सफह–28)

पहले आप ने पढ़ा के एक मुरीद को टीवा पर मदनी चैनल जालीए मुबारक देखते वक्त हुज़ूर सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम की आवाज़ सुनाई दी, अब इस मुरद को बड़े मैदान में स्क्रीन पर जो के सिनेमा के बड़े परदे की तरह बड़ा परदा होता है इसपर इल्यास आत्तार को देखते हुए कष्फ हुवा जिसमें हुजुर सल्ललल्लाहो अलैह व सल्लम ने इल्यास आत्तार के लिये ये पैगाम दिया के आल्लाह

तआला ने इज्तीमा में शरीक तमाम लोंगों की मगफिरत फर्मादी है, यहां ये बताना मक्सुद है की देखिए टीवी और फिल्में देखने वालों को हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम की ज़ियारत नसीब होती है और टीवी के ज़रीए हुजुर सल्लललाहो अलैह व सल्लम लोगों को जन्नत की बिशारत देते है अगर टीवी और फिल्में देखना, बनवाना नाजायज़ होता तो हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम जन्नत की बिशारत न देते बल्के आल्लाह तआला के कहर व अज़ाब की खबर देते और नाराज़ होते और फिर सफेद लिबास और सब्ज़ आमामा जो दावते–ए–इस्लामी का ट्रेड मार्क है वही हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम ने हुवा था इसकी मक्बुलीयत की सनद भी फिल्म देखनेवाले के ज़रये मिली. ये बात हर खास व आम मुसल्मान लिबास व आमामा के मुआमले में न तो हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम ने, न सहाबा ने, न आईम्मा–ए–मुजतहीदीन ने, न गौसपाक ने, न गरीब नवाज़ ने न दीगर आकाबिरे मशाईख रदीआल्लाहु'अन ने गिरोहबंदी की और न आपने मुरीदों और चाहने वालों पर कोई खास आमामा व लिबास लाज़िम किया. इन बुजूर्गो को गरवेदा बनाना या आपनी बड़ाई मक्सुद न थी वो आल्लाह तआला और हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम के दीन को फैलाना चाहते थे इन्ही बुजूर्गो की मेहनत का नतीज़ा है के आज दुनिया के हर गोशे में मानने वाले मौजुद है । अगर तसवीर जायज़ होती तो ये बुजूर्ग वज़ू, नमाज़, अहराम बांधना तवाफ करना, लब तराष्ना, खत बनवाना और दीगर ज़रूरी मसाईल की तसवीरें दुर दराज़ के इलाकों दीन की तबलीग के लिए भेज देते, मगर इन्होंने हमेशा तसवीरों का रद किया और हराम कहा बल्के खुद सफर किये बल्के शागिर्दो को भेजा दीन की तबलीब के लिए.

इस तरह की बहोत गुस्ताखियां और झुटे ख्वाब दावते–ए–इस्लामी ने आपनी किताबों में तहरीर की हैं दावते–ए–इस्लामी वाले इल्यास आत्तार के मुरीद करने के लिए तो ज़बरदस्ती पर उतर आते है मगर "मस्लके–आलाहज़रत" पर जो अमल करता है उससे खुद भी दुर होजाते हैं और लोगों को भी दुर करते हैं । इमाम अहलेसुन्नत आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान फाज़िले बरेल्वी रदीआल्लाहु'अन ने बदमज़हबों के रद को फर्ज़ करार दिया है, जानदार की तसवीर (टीवी–विडीयो) को हराम कहा है उसे बनाने व बनवाने वाले को फासीक व फाजीर कहा है मगर दावते–ए–इस्लामी वाले बदमज़हबों के रद से खुद भी दुर है और लोगों को भी दुर रख्ते हैं और विडीयो और फिल्में न सिर्फ इन्के यहां जायज़ है बल्के मुस्तहसन है मस्लक दुरूस्त होगा तोही पिरी–मुरीदी दुरूस्त होगी वर्ना नही. हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम की जोबात तबीयत को आच्छी लगी वो मान ली और जो आच्छी न लगी वो छोड़दी. इस तरह इस किताब में बहोत से ख्वाब बयान किये गये हैं जो इल्यास आत्तार के फज़ाइल और इन्के मर्कज़ फैज़ानेमदीना की मक्बुलीयत और दावते–ए–इस्लामी के लिए हुजूर सल्लललाहो अलैह व सल्लम का इस्तमाल... अब देखिए ये लोग इल्यास आत्तार की बढ़ाई के लिए कहां तक पहुंच सक्ते हैं उन्ही की एक किताब "पंद्रवीं सदी का मुजददीद कोन" मे इन्हों ने माज़ आल्लाह इल्यास आत्तार को गोसेआज़म रदीआल्लाहु'अन से बड़ा मर्तबत वाला लिखा है इन्की गुस्ताखियां इत्नी है की इन्को बयान करना दुश्वार है ।

मजलिस–ए–उल्माए–अहलेसुन्नत, अंजुमन कादरीया चिश्तीया अशरफिया